18 - मोहम्मद साहब

3SHAVC

हजरत मोहम्मद साहब का जन्म अरब के प्रसिद्ध नगर मक्का में हुआ था। उनकी माता का नाम आमिना तथा पिता का नाम अब्दुल्लाह था। जन्म से दो माह पूर्व उनके पिता का निधन हो गया था। छह वर्ष की अवस्था में उनकी माता भी चल बसीं। उनकी माता के देहांत के बाद उनका पालन-पोषण उनके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने और चाचा अबूतालिब ने किया।

मोहम्मद साहब बचपन से ही बड़े नेक और शांत स्वभाव के थे। बड़े होने पर वे अपने चाचा के साथ व्यापार के लिए आस-पास के देशों में जाने लगे थे। वे बड़ी लगन से काम करते थे। उनकी मेहनत और ईमानदारी की प्रशंसा दूर-दूर तक फैल गई। इसीलिए बाहर जाते समय लोग अपने आभूषण और बहुमूल्य सामान उनके पास रख जाते थे और वापस आकर ले लिया करते थे।

उन दिनों अरब देश में बहुत-सी कुरीतियाँ प्रचलित थीं। अरब निवासी अनेक किस्म के अंधविश्वासों में जकड़े हुए थे। वे जादू-टोने में विश्वास करते थे, जुआ खेलते थे और मदिरा पीकर आपस में लड़ते-झगड़ते थे। छोटी-छोटी बातों पर अकड़ दिखाते और एक दूसरे के प्राणों के प्यासे हो जाते थे। ऊँची-ऊँची दरों पर सूद पर पैसा उधार देते थे। इन बुराइयों को देखकर मोहम्मद साहब को बहुत दुःख होता था। उनका मन अशांत हो उठता था। मक्का के पास की पहाड़ियों में 'हिरा' नाम की एक गुफा थी। वे प्रायः उस गुफा में जाकर चिंतन करते और ध्यान लीन हो जाते। वे समाज की बुराइयों को दूर करके उसे समृद्धि और सहयोग के रास्ते पर बढ़ाना चाहते थे।

उन्होंने लोगों को बताया कि सभी मनुष्य बराबर हैं, कोई ऊँचा या नीचा नहीं है। उनका कहना था कि मनुष्य की वह रोजी सबसे पवित्र है, जो उसने अपने हाथ से मेहनत करके

कमायी है। वे बदला लेने से क्षमा कर देना अच्छा समझते थे। वे कहते थे कि पड़ोसी को कष्ट देने वाला आदमी कभी जन्नत में नहीं जा सकता।

उन्होंने कहा कि आदमी को अपनी आमदनी का कुछ हिस्सा गरीबों की मदद में लगाना चाहिए। दूसरों की अमानत की रक्षा करनी चाहिए। सभी धर्मों का आदर करना चाहिए। सूदखोरी नहीं करनी चाहिए। बुरी आदतों जैसे शराब पीना, जुआ खेलना आदि से दूर रहना चाहिए।

आरंभ में मक्का वालों को मोहम्मद साहब की बातें पसंद न आईं। वे उन्हें तरह-तरह से कष्ट देने लगे। वे उन्हें और उनके साथियों को बुरा-भला कहते और उन पर पत्थर बरसाते। एक वद्धृ स्त्री तो उनसे इतनी रुष्ट थी कि जब वे रास्ते से निकलते तो उन पर कूड़ा फेंकती और रास्ते में काँटे बिखेर देती लेकिन मोहम्मद साहब उस रास्ते से चुपचाप निकल जाते और उस बुढ़िया से कुछ न कहते। एक दिन वे उसी रास्ते से जा रहे थे तो न उन पर कूड़ा फेंका गया और न काँटे ही बिखेरे गए। उन्होंने पड़ोसियों से पूछा तो मालूम हुआ कि वह स्त्री बीमार है। मोहम्मद साहब उसका हाल पूछने गए। इस बात का उस स्त्री पर अच्छा प्रभाव पड़ा और उनका बहुत आदर करने लगी।

मक्का वालों के विरोध के बाद भी मोहम्मद साहब बराबर उपदेश देते रहे। मक्का वालों का विरोध बढ़ता ही गया और मोहम्मद साहब ने समझ लिया कि अब उनका यहाँ रहना कठिन है। अतः उन्होंने मदीना जाने का निश्चय किया।

उन्होंने अपने पास रखी हुई दूसरों की धरोहर को अपने चचेरे भाई हजरत अली को सौंप दिया और उनको यह समझाया, ”लोगों को उनकी धरोहर लौटाकर तुम भी मदीना चले आना।“

अब मोहम्मद साहब अपने मित्र अबूबक्र के साथ मदीना की ओर चल दिए। वे पहले शहर के बाहर एक गुफा में रुके। मक्का वाले जब उनके घर में घुसे तो मोहम्मद साहब वहाँ न मिले। वे ढूँढ़ते-ढँ ूढ़ते शहर के बाहर गुफा की ओर चले। लोगों को अपनी ओर आते देखकर अबूबक्र घबराए, मगर मोहम्मद साहब ने कहा, ”अबूबक्र! घबराओ नहीं, खुदा हमारे साथ है। वह हमारी रक्षा करेगा।“ कहा जाता है कि उसी समय मकड़ी ने गुफा के

मुँह पर जाला बुन दिया। जब मोहम्मद साहब के विरोधी उन्हें ढूँढ़ते-ढँूढ़ते गुफा के पास पहुँचे, तब उन्होंने गुफा के द्वार पर मकड़ी का जाला तना हुआ पाया। इससे उन्होंने समझा कि गुफा में कोई नहीं है। वे आगे बढ़ गए और मोहम्मद साहब को न पा सके।

तीन दिन गुफा में रहने के बाद मोहम्मद साहब ऊँटनी पर चढ़कर मदीना की ओर चल पड़े। मक्का से मदीना की यात्रा 'हिजरत' कहलाती है और इसी से हिजरी सन् शुरू होता है।

कुछ दिन बाद मोहम्मद साहब ने एक मस्जिद बनाने की बात सोची। मस्जिद बनाने के लिए जो जमीन पसंद की गई, वह दो अनाथ बच्चों की थी। ये बच्चे जमीन मुफ्त में देना चाहते थे, किंतु मोहम्मद साहब ने मुफ्त की जमीन लेने से मना कर दिया। एक अन्सारी ने इस जमीन का मूल्य चुका दिया। इस जमीन पर मोहम्मद साहब ने एक मस्जिद बनवाई। वे मस्जिद से मिले हुए कमरे में रहने लगे, कुछ समय बाद यह मस्जिद 'मस्जिद-ए-नब्वी' के नाम से प्रसिद्ध हुई।

धीरे-धीरे मोहम्मद साहब के समर्थकों की संख्या बढ़ती गई और उनका यश चारों ओर फैल गया मगर मक्का वाले उनसे झगड़ा करते ही रहे। अंत में मोहम्मद साहब ने मक्का पर विजय प्राप्त कर ली। मक्का वाले बहुत घबराए कि अब मोहम्मद साहब उनसे बदला लेंगे, किंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने घोषणा की, "मक्का वालो ! डरो नहीं। मैं किसी से बदला लेने नहीं आया हूँ। मैं उन सबको माफ करता हूँ, जिन्होंने मेरे साथियों और संबंधियों को मार डाला और मुझे मारना चाहा। मक्का वालो, नेकी के रास्ते पर चलो।"

मोहम्मद साहब के इस व्यवहार का मक्का वालों पर बहुत असर पड़ा। उन्होंने मोहम्मद साहब से क्षमा माँगी और प्रार्थना की कि आप अब यहीं रहें। मोहम्मद साहब ने कहा, "आज मैं तुम लोगों से बहुत खुश हूँ परंतु जिन लोगों ने संकट में मेरा साथ दिया था, मैं उन्हें कैसे छोड़ दूँ? वैसे मैं हज करने हर साल मक्का आता रहूँगा।" यह कहकर मोहम्मद साहब मदीना लौट गए और वहीं रहने लगे। जब उनका देहांत हुआ तो उनकी कब्र मस्जिद से सटे हुए उसी कमरे में बनाई गई, जिसमें वे रहते थे।

मोहम्मद साहब के संदेश हदीस की किताबों में संकलित हैं।

”ईश्वर एक है और वह एकता को पसंद करता है।“

-हजरत मोहम्मद

अभ्यास

शब्दार्थ-

सूदखोरी = ब्याज लेने का काम

धरोहर = अमानत में रखी वस्तु

समृद्धि = खुशहाली

हिजरत = मोहम्मद साहब की मक्का

जन्नत = स्वर्ग से मदीने की यात्रा

उपासना = पूजा

प्रलोभन = लालच

रोजी = कमाई,

जीविका कलाम = कथन

1. **बोध प्रश्न**: उत्तर लिखिए -

(क) मोहम्मद साहब के जन्म के समय अरब में क्या-क्या बुराइयाँ फैली थीं ?

(ख) मोहम्मद साहब अपने विरोधियों से गुफा में कैसे बचे ?

(ग) हिजरत किसे कहते हैं ?

(घ) मोहम्मद साहब ने मानवता को क्या संदेश दिया ?

2. **भाषा के रंग** -

(क) नीचे लिखे शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए -

प्रसिद्ध, अवस्था, प्रशंसा, एकांत, चिंतन, समृद्धि, हिजरत, घोषणा, क्षमा, प्रार्थना

(ख) 'देह' और 'अंत' मिलाकर शब्द बनता है- देह $ अंत = देहांत। इसी प्रकार नीचे दिए गए शब्दों को मिलाकर नया शब्द बनाइए -

सुख+ अंत = ... सीमा+ अंत = ...

दुख+ अंत = ... वेद+अंत = ...

(ग) 'पालन-पोषण' में दो शब्दों का योग है। इस तरह दो शब्दों के मेल से बने शब्दों को युग्म शब्द कहते है। पाठ में आए ऐसे युग्म शब्दों को ढूँढ़ कर लिखिए।

(घ) 'साधारण' शब्द का विलोम बनाने के लिए उसके पहले 'अ' जोड़ देते हैं और शब्द बन जाता है- असाधारण। इसी प्रकार इन शब्दों के पूर्व 'अ' लगाकर उनके विलोम शब्द बनाइए -

सहयोग, निश्चय, धर्म, शांति, भूतपूर्व, विश्वस्तरीय

(ङ) नीचे बने चक्र में क्रमशः दो, तीन, चार और पाँच अक्षरों वाले दो-दो शब्द उदाहरण के लिए दिए गए हैं इसी प्रकार पुस्तक से ढूँढ़कर पाँच-पाँच शब्द प्रत्येक चक्र में लिखिए-

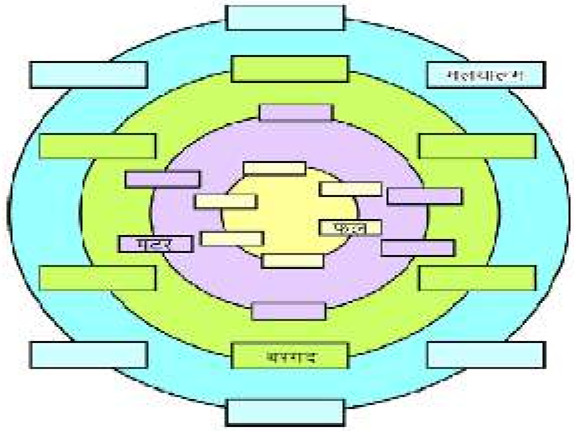

(च) कुछ मुहावरे और उनके अर्थ दिए गए हैं। इन मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

- अकड़ दिखाना - घमंड करना
- प्राणों का प्यासा होना - मार डालने पर उतारू होना
- बुरा भला कहना - बुराई करना
- अपनी बात पर जमे रहना - दृढ़ होना

(छ) नीचे के अंश में दो ऐसे वाक्य आ गए हैं जो बाकी वाक्यों से मेल नहीं खाते। उन्हें ढँूढ़कर अलग कीजिए और बाकी अंश का सुलेख अपनी कापी में कीजिए -

एक खरगोश के दो बच्चे थे। एक काला और एक सफेद। दोनों बच्चे बड़े सुंदर थे। दुकानदार ने कहा- एक टोपी का मूल्य पाँच रुपये हैं। एक दिन मेरी सहेली गेंद से खेल रही थी, तो सफेद खरगोश को गेंद लग गई। मुझे बहुत गुस्सा आया। मैं सफेद खरगोश को अपने घर ले आई। उसको दवा लगाई। पैसे दो और टाफी लो। थोड़ी देर बाद वह दौड़ने लगा तो मैं उसको फिर बागीचे में छोड़ आई। अब वह अक्सर हमारे घर आता है।

3. **आपकी कलम से** -

पाँच बातें लिखिए जो मोहम्मद साहब ने मानवता की भलाई के लिए कहीं।

4. **अब करने की बारी** -

(क) गौतम बुद्ध, ईसा मसीह और गुरुनानक की जीवनियाँ अपने बड़ों से सुनिए।

(ख) अपनी कॉपी में प्रथम अनुच्छेद का सुलेख कीजिए।

5. मेरे दो प्रश्न: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -

6. **इस पाठ से** -

(क) मैंने सीखा - ....

(ख) मैं करूँगी/करूँगा - ....